भारतीय व अमेरिकी जीवन का महत्वपूर्ण अंग -- धार्मिक सहिष्णुता

टिमोथी जे. रोमर

(लेखक भारत में अमेरिकी राजदूत हैं)

भारतीय और अमेरिकी इतना अधिक आदान-प्रदान करते हैं कि साझा मूल्य तथा समान हित हमारी बढ़ती रणनीतिक भागीदारी का आधार हैं। लोकतंत्र, मुक्त समाज, कानून का शासन, सहिष्णुता, विविधता, और धार्मिक स्वतंत्रता जैसी इन अवधारणाओं को भारतीय और अमेरिकी दोनों अच्छी तरह समझते हैं। शिक्षा के महत्व के हमारे साझा मूल्यों के परिणामस्वरूप एक लाख भारतीय छात्र अमेरिका में अध्ययन कर रहे हैं। आर्थिक समृद्धि और रोजगार पैदा करने के हमारे पारस्परिक लक्ष्यों ने भारत को 2003 में उठाकर अमेरिका के 25वें सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार से 2009 में 14वें स्थान पर पहुंचा दिया। अफगानिस्तान में हमारे संयुक्त कार्यक्रम और हाल में ही काउंटर टेरोरिज्म कोआपरेशन इनीशिएटिव पर हस्ताक्षर एक शांतिपूर्ण तथा स्थिर क्षेत्र में हमारे साझा हितों से प्रेरित हैं और भारत अपने सभी पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंधों लाभ उठा रहा है।

मेरी वाराणसी यात्रा भारतीय और अमेरिकी समाज में धार्मिक स्वतंत्रता के महत्व को एक और साझा मूल्य के रूप में रेखांकित करती है जो कि संबंधों के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो हमारे देशों को निकटता के सूत्र में बांधते हैं। भारत दुनिया के चार बड़े धर्मों का जन्म-स्थान है। अमेरिका को यूरोपियनों ने एक ठिकाने की खोज के दौरान पाया था जहां वे अपनी धार्मिक परंपरा का पालन कर सकें। दोनों देश बिना किसी सरकारी राष्ट्रीय धर्म के धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र हैं जो धार्मिक स्वतंत्रता के लिए संवैधानिक अधिकार प्रदान करते हैं। धार्मिक स्वतंत्रता के इस अधिकार ने हमारे नागरिकों में सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का बीज बोया है और दोनों देशों में विभिन्न समुदायों के धर्म के फलने-फूलने की अनुमति देता है।

जैसा कि अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन ने 1790 में रोड आइलैंड में ज्युइश समुदाय को एक पत्र में लिखा था, ''संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ... धार्मिक कट्टरता, उत्पीड़न को कोई छूट व सहायता नहीं देती है।'' यह आज भी सच है, और संयुक्त राज्य अमेरिका इस पर कायम है। जैसा कि राष्ट्रपति ओबामा ने कहा है, ''अमेरिका एक ऐसा देश है जहां विभिन्न आस्थाओं के लोग शांतिपूर्वक एक-दूसरे के पारस्परिक सम्मान के साथ रहते हैं, जबकि शेष दुनिया में अन्यत्र धार्मिक संघर्ष जारी है।'' इसी प्रकार, निश्चित रूप से भारत के बारे में कहा जा सकता है, इसकी धार्मिक विविधता इसके विविध राजनीतिक नेतृत्व में स्पष्ट और गौरवशाली प्रमाण है।

संपूर्ण अमेरिका और भारत में अपनाई गई धार्मिक स्वतंत्रता के महत्व ने हमारे नागरिकों के जीवन को ऊंचा उठाया हैं। यह वाराणसी जैसी जगहों में इतिहास का हिस्सा है, हिंदुओं के लिए पवित्रतम स्थान और वह जगह है जहां बुद्ध ने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों का पहला उपदेश दिया था। यह हमारी शिक्षा प्रणाली का हिस्सा है। मैंने नौटर डेम विश्वविद्यालय से स्नातक किया हैं, यह एक कैथलिक विश्वविद्यालय है जिसका मुख्य लक्ष्य आस्था और शिक्षा के बीच संबंध की रचना करना है। भारत के उत्कृष्ट विश्विद्यालयों में एक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्यों में एक है-- धार्मिकता और नैतिकता को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में शामिल करके युवाओं के चरित्र निर्माण को बढ़ावा देना है। आस्था संगीत, कला, और साहित्य में सम्मिलित है हमारी संस्कृति का मुख्य हिस्सा हो सकती हैं।

धार्मिक स्वतंत्रता से अन्य धर्मों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता पैदा होती है, जो भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों का सर्वोच्च गुण रहा है। वाराणसी मात्र हिंदुओं का तीर्थ स्थान नहीं है बल्कि बौद्धों और जैन का भी है। भारत स्वामी विवेकानंद का जन्म-स्थान है, उनका 1893 में शिकागो पार्लियामेंट में दिए गए प्रसिद्ध भाषण का मुख्य विषय धार्मिक सहिष्णुता थी जो आज भी सत्य प्रतीत होता है। अमेरिका अब प्रत्येक योग्य धर्मों का निवास है। सिक्ख अमेरिका में 130 सालों से रह रहे हैं और हमारे देश में आज इस्लाम सबसे तेजी से फैलने वाला धर्म है।

जनतंत्रों में धार्मिक स्वतंत्रता दिन-प्रतिदिन के जीवन निर्माण में सभी धर्मों को हिस्सा लेने अनुमति देती हैं। विभिन्न धर्मों के मूल्यों जैसे करुणा और दूसरों की सहायता करना हमारे समाज को प्रभावित करता है, हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली को उन्नत करता है, और हमारे नागरिकों के जीवन को प्रभावित करता है। अमृतसर में सिक्ख स्वर्ण मंदिर में स्वयंसेवक सभी आस्थाओं के बच्चों को अच्छा भविष्य प्रदान करते हुए प्यार और ममता देते हैं। आगा खान फाउंडेशन बेघर बच्चों को कलाएं सिखाता है, जब वे बड़े होंगे तब समाज का उपयोगी सदस्य बनने के लिए उनको अच्छी तरह तैयार करता है।

यह सभी अच्छे कार्य, और लाखों और जो भारत में रोज होते हैं, यह धार्मिक स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप हैं क्योंकि धार्मिक व्यवहार में दया और धर्म के कार्य सम्मिलित हैं। धर्म लोकतंत्र के कारण पनपता है, जो व्यक्ति और धर्म को ऐसे धार्मिक कार्य करने की स्वतंत्रता तथा स्थान प्रदान करता है जो कि धार्मिक विश्वासों की आधारशिला रखते हैं।

दूसरी ओर, धार्मिक स्वतंत्रता से लोकतंत्र पनपता है, क्योंकि धर्म का सार्वभौमिक विश्वास जैसे अपने पड़ोसी की सहायता करना, वंचित लोगों को देना, स्वयंसेवा, और धर्मार्थ योगदान करना यह हमारे समाज को प्रभावित करने और बेहतरी की ओर मोड़ने के लिए आपस में घुल-मिल गए हैं।

गत वर्ष, नई दिल्ली में राजघाट पर मुझे गांधी जी के जन्मदिन समारोह में भाग लेने का सौभाग्य और सम्मान मिला था। पूरे समारोह में प्रत्येक धर्म को प्रार्थना या भजन द्वारा अपनी आस्था व्यक्त करने का अवसर दिया गया। यह गांधी जी के लिए एक करुणात्मक और अनुकूल श्रद्धांजलि थी, जो मूलभूत सत्य का सिद्धांत, करुणा, और अहिंसा के साथ सभी धर्मों की समानता में विश्वास करते थे। यह सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखने की लोकतंत्र की एक अभिव्यक्ति थी।

गांधी जी से जब पूछा गया कि क्या वह हिंदू हैं, गांधी जी ने उत्तर दिया, ''हां, मैं हूं। मैं एक ईसाई हूं, एक मुस्लिम, एक बौद्ध, एक ज्यूइस।'' जैसा मैंने भारत में हर जगह महसूस किया है, मैं निश्चित रूप से वाराणसी में भी धार्मिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र के मेल-मिलाप को देखूंगा और वैसा ही महसूस करूंगा जैसा गांधी जी ने किया होगा।

भारत में अपनी यात्राओं के दौरान, मैं लखनऊ में शिया मौलवियों से मिला; भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर तथा चेन्नई में मेलापोर कपालीश्वर मंदिर गया; अमृतसर में स्वर्ण मंदिर में अपनी श्रद्धा व्यक्त की; और नई दिल्ली में मैनें अपने परिवार के साथ चर्च प्रार्थनाओं में भाग लिया। अविश्वसनीय रूप से धार्मिक विविधता और आस्था का महत्व जो हमें भारत में मिला जिसका मैं साक्षी हूं यह बिल्कुल वैसा ही हैं जैसा कि अमेरिका में यात्राओं दौरान हमने देखा है। आस्था का महत्व है यह दोनों देशों के बीच समानता के बहुत से उदाहरणों में एक है जो हमारी साझेदारी को इतना मजबूत और स्थाई बनाती है। जैसा कि राष्ट्रपति ओबामा ने कहा है, ''अमेरिका और भारत के बीच संबंध अद्वितीय हैं क्योंकि हमारे नैतिक मूल्य समान हैं, दो विशालतम लोकतंत्रों के नाते और विविधता संपन्न होने के नाते हम दोनों देशों के बीच गहरे और निकट संबंध हैं।''